International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

भारतीय लोक चित्रकला की सांस्कृतिक धरोहर: एक परिचय

सुरेश चौधरी

शोधार्थी, दृश्य कला विभाग, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश

Abstract

कला मनुष्य की सुंदरता के प्रति भावनाओं की सूचक होती है और यह मनुष्य की संस्कृति की ही उपज है। भारत एक प्राचीन देश है जहाँ कला एवं संस्कृति में लोक कला का अनूठा समन्वय दिखाई देता है। संस्कृति और रचनात्मकता दोनों ही समाज और संस्कृति के सभी पहलुओं को प्रभावित करती है। भारतीय लोककला के विभिन रूपों का एक लंबा इतिहास है जो हज़ारों पीढ़ियों से चली आ रही हैं। यह शोध पत्र भारत के विभिन लोक चित्र कलाओं की एक झलक है।

Keywords: लोक चित्रकला, चित्रकारी, हस्तशिल्प, मधुबनी चित्रकला, फड़ चित्रकला, वारली चित्रकला, कलमकारी, गोंड चित्रकला, पटचित्र, तंजौर चित्रकला, चेरियाल स्क्रॉल चित्रकला, कलामेझुथु, मंडाना कला, राजपूत चित्रकला, सौरा चित्रकला, भील कला, मैसूर चित्रकला, कांगड़ा लघु चित्रकला

भूमिका

भारत के पास एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है, जो इसकी कला और शिल्प के माध्यम से प्रकट होती है। भारत में, प्रत्येक क्षेत्र की एक विशिष्ट कला है, उदाहरण के लिए, बिहार की मधुबनी चित्रकारी, गुजरात की पिथोरा चित्रकारी, महाराष्ट्र की वर्ली चित्रकारी और मध्य प्रदेश की गोंड कला। भारत के कई कला रूपों को विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त हुई है और कला प्रेमिओं ने प्रशंशा की है । प्राचीन काल से, मनुष्य ने अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के तरीके और साधन खोजे हैं और अपने परिवेश, प्रकृति, वनस्पति और जीवों को सरहाया है, और विभिन्न कला रूपों को चित्रकारी, हस्तशिल्प, कविताएँ और लेखों के माध्यम से पौराणिक देवी-देवताओं का सम्मान किया है। इस पेपर में भारत के विभिन्न कला रूपों और उन्हें बढ़ावा देने में विभिन्न स्कूलों की भूमिका की समीक्षा करने का प्रयास किया गया है।

भारत की लोक चित्रकलाएँ

मधुबनी चित्रकला: मधुबनी चित्रकला की उत्पत्ति बिहार के मधुबनी गांव में हुई और यह आमतौर पर महिलाओं द्वारा बनाई जाती है। इस चित्रकला में उंगलियों, ब्रश, निब-पेन, माचिस की तीली और प्राकृतिक रंगों का प्रयोग किया जाता है। मधुबनी चित्रकला दीवारों, पवित्र स्थानों की जमीन, आदि पर बनाई जाती हैं। ये चमकीले रंग की मधुबनी चित्रकला अपने ज्यामितीय पैटर्न की विशेषता होती हैं और बिहार के मधुबनी जिले में व्यापक रूप से प्रचलित हैं। आधुनिक समय में मधुबनी चित्रकला, कैनवस, कपड़े और हस्तनिर्मित कागज पर भी बनाई जाती है। मधुबनी चित्रकला भारत की लोक चित्रकलाओं में सबसे प्रसिद्ध और लोकप्रिय शैलियों में से एक है। मधुबनी पेंटिंग दो तरह की होतीं हैं- भित्ति चित्र और अल्पना। मधुबनी चित्रकला के विषय मूलतः प्रकृति से प्रभावित है जिसमें सूर्य, चंद्रमा, तुलसी के पौधे, पौराणिक कथाओं और हिंदू देवी-देवताओं को उकेरा जाता है। माना जाता है कि इस कला की उत्पत्ति रामायण काल में हुई जब राजा जनक ने ग्रामीणों से राजा राम और सीता की शादी के अवसर पर पूरे गांव को सजाने का अनुरोध किया। कई मधुबनी कलाकारों को राष्ट्रीय पुरस्कार और पद्मश्री जैसे कई पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं, जिससे कला को प्रसिद्धि और मान्यता प्राप्त हुई है ।

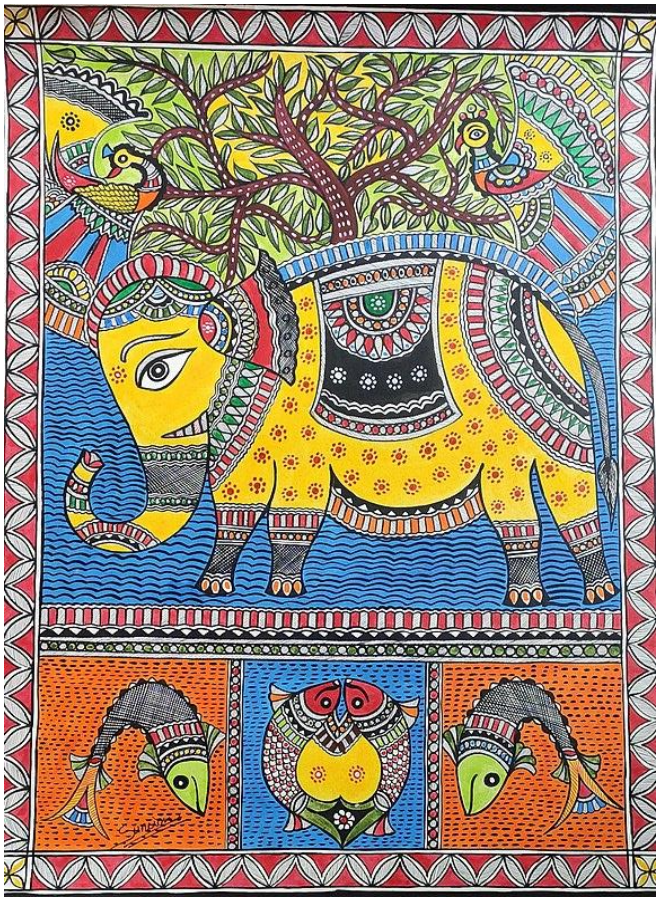

मधुबनी चित्रकारी

Images Source: https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Mithila-Craft-from-SunainaThakur-21-Apr.jpg

फड़ चित्रकला:

फड़ धार्मिक स्क्रॉल चित्रकला की शैली है जो कि राजस्थान में प्रचलित है। फड़ चित्रकला पारंपरिक रूप से कपड़े या कैनवास के लंबे टुकड़े पर की जाती है जिसे फड़ के नाम से जाना जाता है। फड़ राजस्थान के लोक देवी-देवताओं, मुख्यता पाबूजी और देव-नारायण को दर्शाते हैं। राजस्थान में लोक देवी-देवताओं के पुजारी-गायक भोपा एक फड़ लेकर जाते हैं और इसे एक वहनीय मंदिर के रूप में प्रयोग करके उसके सामने अपने गायन का प्रदर्शन करते हैं।

यह एक कथात्मक चित्रकला की परंपरा है, जिस पर पृथ्वीराज चौहान जैसे नायकों की कहानियां ज्यादातर लाल, पीले और नारंगी रंगों में चित्रित की जाती हैं। फड़ चित्रकला युद्ध के मैदान, रोमांच, प्रणय आदि को दर्शाते हैं। जोशी समुदाय ने बड़े पैमाने पर फड़ चित्रकला पर काम किया और बाद में जोशी समुदाय के शिल्पगुरु श्री लाल जोशी को पद्मश्री के साथ पुरस्कृत किया गया।

फड़ चित्रकला

Images Source: https://www.artisera.com/blogs/expressions/phad-paintings-of-rajasthan

वारली चित्रकला: वारली चित्रकला महाराष्ट्र की प्रमुख जन-जातियों में से एक, वारली से संबंधित है। इसकी शुरुआत 2500 वर्षों से अधिक समय पहले हुई है। इसमें अधिकतर स्थानीय लोगों की दैनिक जीवन, जैसे खेती, नृत्य, प्रार्थना, शिकार, बुआई आदि और प्रकृति के तत्वों को दर्शाया जाता रहा है। ये चित्रकला सामाजिक और दैनिक जीवन पर केंद्रित हैं और पौराणिक पात्रों और देवी-देवताओं को दिखाने के बजाय प्रकृति पर केंद्रित है। वरली चित्रकला पारंपरिक रूप से चावल के घोल के साथ बारीक़ टहनियों के उपयोग से झोपड़ियों की मिट्टी की दीवारों पर बनाई जाती है। इन चित्रों की विशेषता सफेद रंग, सरल ज्यामितीय डिजाइन और त्रिकोण, वर्ग और वृत्त जैसे नमूने हैं। पहाड़ों और नुकीले पेड़ों को त्रिकोण द्वारा दर्शाया जाता है। सूर्य और चंद्रमा को वृत्त द्वारा दर्शाया जाता है। वारली चित्रकला अब कैनवास, कागज और कपड़े पर भी बनाई जाती हैं और बहुत लोकप्रिय हो गई हैं। जिव्या सोमा माशे, एक प्रसिद्ध वारली कलाकार ने इस कला को लोकप्रिय बनाया है। वरली चित्रकला में उनके योगदान के लिए उन्हें 2011 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया था।

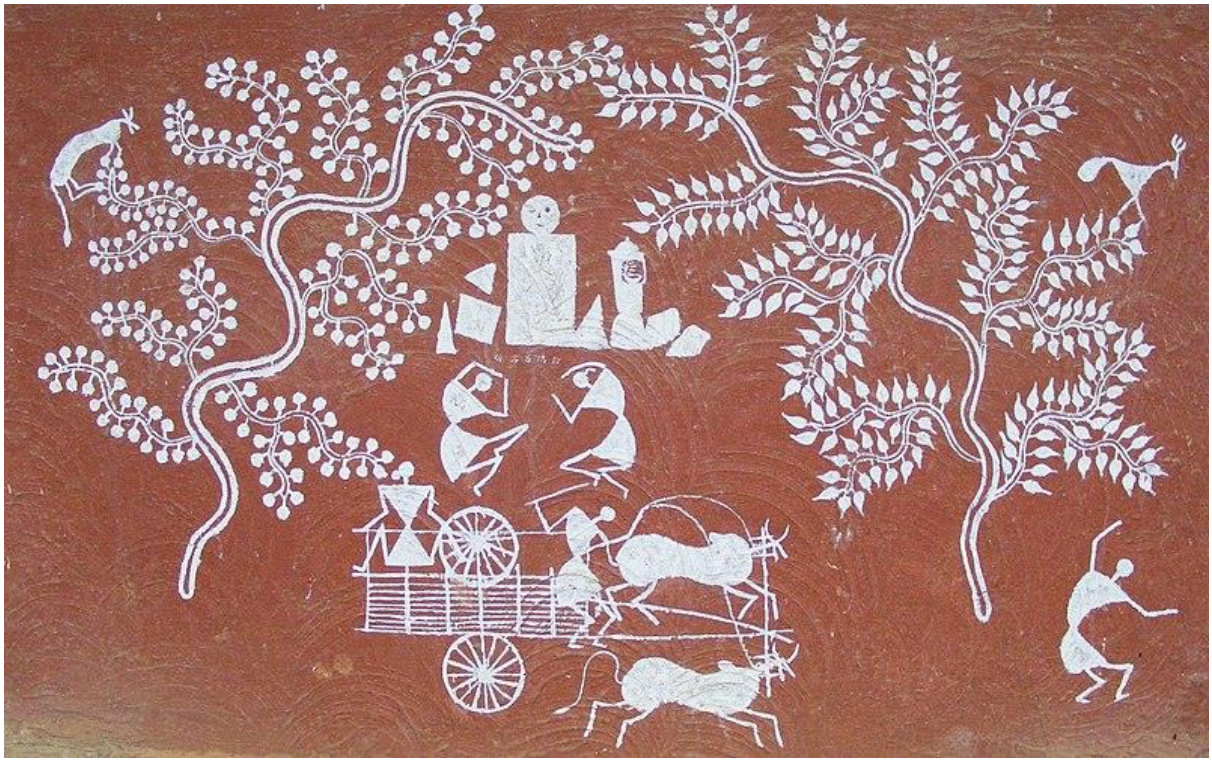

वारली चित्रकला

Image Source:
https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Warli_Paintings_SGNP_by_Raju_Kasambe_DSCF0200_%281%29_06.jpg

कलमकारी: कलमकारी शिल्प कौशल आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु के गांवों में कुछ परिवारों द्वारा अभ्यास किया जाता है। कलमकारी में आमतौर पर रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों के दृश्य, संगीत वाद्ययंत्र, जानवर, बुद्ध और बौद्ध कला, फूल और स्वस्तिक जैसे हिंदू प्रतीकों चिन्नो को दर्शाया जाता है। कलमकारी का अभ्यास 3000 से अधिक

वर्षों से किया जा रहा है। कलमकारी कपड़े पर कलाम या बांस की कलम का उपयोग करके की जाती है जिसमें प्राकृतिक, मिट्टी और वनस्पति के रंगों का उपयोग किया जाता है। यह आमतौर पर सूती कपड़े पर की जाती है और इसमें तेईस चरणों की प्रक्रिया शामिल होती है। कलमकारी कला व्यापक रूप से साड़ियों और परिधानों पर बहुत लोकप्रिय है।

कलमकारी

Image Source: https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Gita-kalamkari-painting.JPG

गोंड चित्रकला: गोंड चित्रकला एक आदिवासी लोक कला है जो मध्य प्रदेश के गोंड समुदाय में प्रचलित है। 'गोंड' शब्द द्रविड़ियन अभिव्यक्ति 'कोंड' से लिया गया है जिसका अर्थ है, हरा पर्वत। यह चित्रकारी 1400 वर्षों से अधिक समय से की जा रही है। इस चित्रकारी में आमतौर पर वनस्पति और जीवों, लोगों के दैनिक जीवन, देवी-देवताओं, त्योहारों और समारोहों को दर्शाया जाता रहा है। गोंड चित्रकला में पौराणिक कहानियों, प्रकृति, अनुष्ठानों को उकेरा जाता है। ये बहुत ही जटिल काम और जीवंत चित्रकला है। गोंड जनजाति भारत की सबसे पुरानी जनजातियों में से एक है। गोंड कलाकार जनगढ़ सिंह श्याम ने इस कला को को पुनर्जीवित किया और इसे नई ऊंचाइयों पर ले गए। मूल रूप से, गोंड चित्रकला में उपयोग किए जाने वाले रंग प्राकृतिक संसाधनों जैसे गाय के गोबर, पौधों के रस, लकड़ी के कोयले, रंगीन मिट्टी, आदि से प्राप्त होते हैं। लेकिन आजकल, कलाकार सिंथेटिक और ऐक्रेलिक रंगों का उपयोग करते हैं।

पटचित्र: पटचित्र ओडिशा और पश्चिम बंगाल राज्य की एक पारंपरिक स्क्रॉल चित्रकला है। पटचित्र में मुख्य रूप से पौराणिक और धार्मिक विषयों, हिंदू देवी-देवताओं आदि को दर्शाया गया है। भगवान जगन्नाथ के मंदिर का चित्रण, कृष्ण लीला, भगवान विष्णु के दस अवतार और पंचमुखी - भगवान गणेश के रूप में चित्रण कुछ लोकप्रिय विषय हैं

जिन्हें पटचित्र कला में दर्शाया जाता है। 'पटचित्र' शब्द की उत्पत्ति पट्टा अर्थात कपड़ा से हुई है। पटचित्र कला में उपयोग किए गए रंग प्राकृतिक और जीवंत हैं जैसे सफेद, पीला, और लाल। इस कला के आरम्भ का समय 3000 वर्षों से अधिक रहा है और इस कला के कलाकारों को महापात्र के नाम से जाना जाता है। पटचित्र कलाकारों में से सबसे प्रसिद्ध रघुनाथ महापात्र रहे, जिन्हें भात के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया था।

पटचित्र

Image Source: https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Pattachitra_Painting_%2817041543331%29.jpg

तंजौर चित्रकला: तंजौर चित्रकला एक प्राचीन भारतीय लोक कला है जिसकी उत्पत्ति दक्षिण भारत के तंजौर शहर में हुई थी। यह एक पारंपरिक दक्षिण भारतीय चित्रकला शैली है और इसका इतिहास 1600 ईस्वी पूर्व का है। तंजौर चित्रकला सोने की पन्नी, कीमती पत्थरों और जीवंत रंगों के लिए जानी जाती हैं । लकड़ी के तख्ते पर की गई रंगीन चित्रकारी का मुख्य विषय हिंदू देवी-देवता, संत, हिंदू पुराणों, और पौराणिक कथाओं आदि के दृश्य हैं। तंजौर चित्रकला के बारे में एक आश्चर्यजनक तथ्य यह है कि इन चित्रों में उपयोग की जाने वाली सोने की पत्तियों की चमक हमेशा बनी रहती है।

चेरियाल स्क्रॉल चित्रकला: यह शैली नकाशी कला का एक संशोधित संस्करण है, जिसकी उत्पत्ति तेलंगाना में हुई थी। कथात्मक प्रारूप में चित्रित, ये 40-45 फीट के स्क्रॉल मुख्य रूप से भारतीय पौराणिक कथाओं, पुराणों और महाकाव्यों की कहानियों को दर्शाते हैं। ये चेरियल स्क्रॉल हाथ से बुने हुए खादी के कपड़े पर बनाये जाते रहे हैं । कपड़े को एक विशेष रूप से तैयार घोल से उपचारित किया जाता है और उस पर घोल की कई परतें लगाई जाती हैं ताकि कपड़ा सख्त हो जाए और वह रंग को सोख ले जिससे चित्रकला का जीवनकाल बढ़ जाए। उपयोग किए गए रंग कलाकारों द्वारा प्राकृतिक स्रोतों से बनाए जाते हैं और ब्रश गिलहरी के बालों से बनाए जाते हैं। चेरियाल चित्रकला के कुछ सामान्य विषय हैं- कृष्ण लीला, रामायण, महाभारत, शिव पुराण, और मार्कंडेय पुराण। यह कला अब तेलंगाना के चेरियाल गांव के केवल कुछ परिवारों तक ही सीमित है।

कलामेझुथु: यह एक पारंपरिक भारतीय कला है जो केरल के मंदिरों में प्रचलित है। इस चित्रकला को देवी-देवताओं जैसे काली, अय्यप्पन, भद्रकाली, नाग देवता आदि के आशीर्वाद के लिए एक प्रसाद के रूप में पेश किया जाता है। इन देवताओं के चित्र फर्श पर प्राकृतिक रंगद्रव्य का उपयोग करके बनाए जाते हैं। आमतौर पर, पांच प्रकार के रंगीन पाउडर का उपयोग किया जाता है, सफेद - चावल का आटा, काला - चारकोल पाउडर, पीला - हल्दी पाउडर, हरा - हरी पत्तियों का पाउडर, और लाल - हल्दी पाउडर और नींबू का मिश्रण। चित्र सबसे पहले केंद्र से शुरू होता है और बाहर की ओर विकसित होता है। जब चित्र तैयार हो जाता है, तो कलाकार एक परंपरा के रूप में देवता की पूजा करने के लिए कुछ वाद्ययंत्रों के साथ अनुष्ठान गीत गाते हैं। अनुष्ठान समाप्त होने के बाद चित्र को तुरंत मिटा दिया जाता है।

मंडाना कला: यह कला जनजातीय कला के सबसे पुराने रूपों में से एक है। मांडना राजस्थान, मालवा और निमाड़ क्षेत्र की लोक कला है। इसे विशेष अवसरों पर महिलाएँ ज़मीन अथवा दीवार पर बनाती हैं। मंडाना कला बहुत सरल लेकिन आकर्षक हैं। मंडाना चित्र कपास के टुकड़े, टहनियाँ, गिलहरी के बालों और खजूर की लकड़ी से बने एक साधारण ब्रश से बनाई जाती हैं। रति (स्थानीय मिट्टी), पानी और लाल गेरू के साथ मिश्रित गाय के गोबर का उपयोग करके आधार तैयार किया जाता है। आकृति बनाने के लिए चूना, ईंट और चाक पाउडर का उपयोग किया जाता है। मांडना चित्रों में मोर, बाघ, पुष्प, महिलाएं, भगवान गणेश, ज्यामितीय आकार, जाली और वैदिक यज्ञ मुख्य हैं। यह कला ख़त्म हो रही है और ऐसे कलाकारों को ढूंढने की ज़रूरत है जो इसे जीवित रख सकें और इसकी पुरानी लोकप्रियता वापस पाने में लाने में सहायक हों ।

राजपूत चित्रकला: इसे राजस्थानी चित्रकला के रूप में भी जाना जाता है, 17वीं और 18वीं शताब्दी के आसपास राजस्थान के राजपूताना शाही दरबारों में उत्पन्न और विकसित हुई। राजपूत चित्रकला में मुख्य चित्रण हिंदू महाकाव्य,

महाभारत और रामायण, और हिंदू पौराणिक कथाओं के दृश्य हैं। राजपूत चित्रकला बहुत सूक्ष्म विवरण और प्राकृतिक रंगों के साथ बनाई जाती हैं । उपयोग किए गए रंग खनिजों, पौधों के स्रोतों, सीपियों, और यहां तक कि कीमती पत्थरों से भी निकाले जाते हैं। राजपूत चित्रकला में शुद्ध सोने और चाँदी का भी प्रयोग किया जाता था। इन रंगों को तैयार करने में हफ्तों से महीनों का समय लगता है और जिन ब्रशों का इस्तेमाल किया जाता है वे गिलहरियों के बालों से बनाये जाते हैं। राजस्थानी चित्रकला ज्यादातर महलों की दीवारों, किलों के भीतरी कक्षों और हवेलियों पर की जाती रही है। राजस्थानी चित्रकला की दो शैलियों हैं- राजस्थानी शैली जो कि राजपूत दरबारों से संबंधित हैं, और पहाड़ी शैली जो कि हिमालय की तलहटी के राजपूत दरबारों से संबंधित हैं।

सौरा चित्रकला: यह कला ओडिशा राज्य की एक जनजातीय कला है, जो एक प्रकार का भित्ति चित्र है और देखने में वर्ली चित्रकला के समान है। सौरा चित्रकला को प्रतीक रूप में भी जाना जाता है और यह देश की सबसे प्राचीन जनजातियों में से एक, सौरा जनजाति द्वारा की जाती रही है । ये चित्रकला उनके लिए धार्मिक रूप से महत्वपूर्ण है। घरों की दीवारों पर ये चित्र गाँव के मुख्य देवता को समर्पित हैं, इसके अलावा कुछ रूपांकन सूर्य, चंद्रमा, वृक्ष, लोग, घोड़े और हाथी आदि का भी किया जाता है । इन सौरा चित्रों का आधार लाल या पीले गेरू से तैयार किया जाता है और ब्रश का काम बांस की कोमल पतली डंडी से लिया जाता है। सौरा चित्रकला में प्राकृतिक रंगों का उपयोग किया जाता है, जो चावल, सफेद पत्थर, रंगीन मिट्टी, इमली के बीजों के मिश्रण, फूल और पत्तियों के अर्क और अंत में सिन्दूर से बनाये जाते हैं। सौरा चित्रों में आकृतियाँ कम कोणीय, अधिक लम्बी और बड़ी होती हैं। आजकल, सौरा चित्रकला कैनवास, कागज, कपड़े, और मोबाइल कवर जैसे नए माध्यमों पर भी की जा रही है।

भील कला: यह कला भील आदिवासी समुदाय द्वारा प्रचलित एक और आदिवासी कला है। भील कला मध्य प्रदेश, गुजरात, राजस्थान और महाराष्ट्र में प्रचलित है और आदिवासी जीवन को प्रकृति से जोड़ती है। भील कला पारंपरिक रूप से घरों की मिट्टी की दीवारों पर की जाती है और ऐसा करने के लिए नीम की छड़ें, टहनियाँ और प्राकृतिक रंगों का उपयोग किया जाता है। चमकीले और जीवंत रंग हल्दी, आटे, तेल और पत्तियों से बनाये जाते हैं। भील कला इस जनजाति के रोजमर्रा के जीवन को दर्शाती है और इनमें आम तौर पर कई नमूनों और रंगों में समान बिंदुओं से ढकी बड़ी आकृतियाँ होती हैं। भील कला में प्रकृति, वनस्पति और जीव, भील देवता, जन्म और मृत्यु, अनुष्ठान और त्यौहार शामिल हैं। आजकल इस कला को कैनवास पर भी किया जाता है और प्राकृतिक रंगों के स्थान पर ऐक्रेलिक रंगों का उपयोग किया जाता है।

मैसूर चित्रकला: यह कला कर्नाटक के मैसूर शहर में विकसित हुई है और इसमें तंजौर चित्रकला के समान पतली सोने की पत्तियों का उपयोग किया गया है। हिंदू देवी-देवता, और पौराणिक कथाओं के दृश्य इन चित्रों के मुख्य विषय हैं। मैसूर चित्रकला के निर्माण में कई चरण होते हैं। पहले चरण में कलाकार चित्र का प्रारंभिक चित्रण करता है। बाद में, वे जिंक ऑक्साइड और अरबी गोंद का एक पेस्ट बनाते हैं। इस पेस्ट का उपयोग पेंट के उन हिस्सों पर कुछ हद तक ऊँची नक्काशी करने के लिए किया जाता है। फिर सोने की पन्नी को सतह से जोड़ा जाता है। रंगों की मदद से बाकी चित्र तैयार किया जाता है। एक बार जब रंग पूरी तरह से सूख जाता है, तो इसे ढकने के लिए पतले कागज का उपयोग किया जाता है और इसे मुलायम पत्थर से आसानी से पोंछ दिया जाता है। कलाकार विभिन्न पौधों-फूलों और खनिजों के रंगों का उपयोग करते हैं । गिलहरी, ऊँट और बकरी के बालों के ब्रश का उपयोग किया जाता है। कभी-कभी रेखाएँ खींचने के लिए घास का भी उपयोग किया जाता है। इस कला के दर्शक अक्सर इसकी सुंदरता से मोहित हो जाते हैं।

कांगड़ा लघु चित्रकला: हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा की लघु चित्रकला शैली 18वीं शताब्दी के मध्य में अस्तित्व में आई। कांगड़ा लघु चित्रकला में प्रदर्शित उन्नयन और विशेषताओं की काफी सराहना की गई। चित्रकला के इस रूप को मिले जबरदस्त समर्थन के कारण बाद में पहाड़ी कला का स्थान कांगड़ा लघु चित्रकला ने ले लिया। मुख्य केंद्र जहां पहाड़ी लघु चित्रकला का व्यापक रूप से अभ्यास किया जाता रहा है वे हैं बिलासपुर, नूरपुर, गुलेर और कांगड़ा। बाद में इसने कुल्लू, सुकेत, अर्की और अन्य क्षेत्रों में भी अपना स्थान बना लिया। हालाँकि कई राजाओं ने कांगड़ा चित्रकला के संरक्षक के लिए काम किया, यह कला महाराजा संसार चंद के शासनकाल में अधिक विकसित हुआ । पहाड़ी चित्रकारों ने पीले, लाल और नीले जैसे शुद्ध रंगों का उपयोग किया जिनकी चमक दो सौ वर्षों के बाद भी बरकरार है। कांगड़ा चित्रकला का विषय जीवंत है और इसकी लय और सुंदरता से भरी गीतात्मक शैली अति सुन्दर है।

कांगड़ा लघु चित्रकला

उपसंहार

किसी ने ठीक ही कहा है "*सुंदर शरीर नष्ट हो जाता है, लेकिन कला कभी नहीं मरती*"। कला वास्तव में एक सार्वदेशिक भाषा है; यह अभिव्यक्ति का वह रूप है जिसके लिए बोलने की जरूरत नहीं होती। भारत शुरू से ही कला का एक संरक्षक रहा है। भारतीय कलाकार अपनी विशिष्ट और रचनात्मक कलाकृतियों के लिए प्रसिद्ध हैं। भले ही कला के मामले में दुनिया काफी आगे बढ़ गई है, लेकिन भारतीय प्राचीन चित्रकला शैली अभी भी भारत में प्रचलित है। भले ही फूल की कलियों की तरह खिलने वाली ये कलाएँ व्यापक रूप से विदित नहीं हैं, लेकिन यह आंखों को शांति और सुख पहुंचाती हैं।

संदर्भ सूची

1. अनीता गुप्ता (2022) राजस्थानी कला। नई दिल्ली: एमजी बुक्स एंड पब्लिकेशन
2. अनीता बोस (2023) ओडिशा की पटचित्रा। नई दिल्ली: कॉमन बुक्स
3. अभिनव कुमार वर्मा, रामबाबू मुप्पीदी एवं अनूप सिंह राणा (2023) चेरियाल पेंटिंग: फैशन एक्सेसरीज डिजाइन पर अध्ययन में हैदराबाद की प्रसिद्ध पेंटिंग्स: सस्टेनेबिलिटी (आर्ट, क्राफ्ट एंड डिजाइन) वॉल्यूम -1 (एडिटर्स रामबाबू मुप्पीदी और अनूप सिंह राणा) । नई दिल्ली: एससीआईईजी प्रकाशन (pp 32 - 42) ।
4. एमएस रंधावा (1994) प्रेम पर कांगड़ा पेंटिंग्स। नई दिल्ली: प्रकाशन प्रभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय
5. कांतिलाल निनामा (2022) भील जनजाति का सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास. राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर
6. के. प्रकाश (2004) कलमकारी: आंकड़े और डिजाइन। नई दिल्ली: अंग्रेजी संस्करण प्रकाशक और वितरक (भारत)
7. कोडाई मत्सुओका और भज्जू श्याम (2019) कला की उत्पत्ति: पाटनगढ़ का गोंड गांव। नई दिल्ली: तारा बुक्स
8. मुलिक राज आनंद (2003) मधुबनी चित्रकला। नई दिल्ली: अभिनव प्रकाशन।
9. वंदना जोशी (2012) मेवाड़ की लोक कला: सनक। नई दिल्ली: हिमांशु प्रकाशन।
10. संतोष माली एवं राजेश धनगड़ा (2014) वर्ली पेंटिंग की कला। नई दिल्ली: क्रिएटस्पेस इंडिपेंडेंट प्रकाशन
11. सालिग्राम कृष्ण रामचंद्र राव (2004) मैसूर चित्रमाला: पारंपरिक चित्र। कर्नाटक चित्रकला परिषद।
12. सुमन मिश्रा (2013) मंदाना काला। नई दिल्ली: पत्रिका प्रकाशन ।
13. https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Mithila-Craft-from-SunainaThakur-21-Apr.jpg
14. https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Warli_Paintings_SGNP_by_Raju_Kasambe_DSCF0200_%281%29_06.jpg
15. https://www.artisera.com/blogs/expressions/phad-paintings-of-rajasthan